Dr. Bechu Prasad Singh.
Associate Professor
Deptt of Pol. Science.
Sher Shah College, Sasaram.

B.A III Hons.
Paper — VI

प्रश्न → जे. एस मिल के स्वतंत्रता सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या करें।

उत्तर → 19वीं सदी के मध्य में व्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रश्न महत्वपूर्ण बन गया था। बेन्थम और उसके उपयोगितावादी के सुधारवादी कार्यों से नागरिकों के जीवन पर शासन का नियंत्रण बढ़ता जा रहा था। शासन द्वारा अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख को अपना निर्देशक सिद्धांत स्वीकार कर लिए जाने के कारण सरकार का कार्य क्षेत्र बहुत बढ़ गया था। ऐसी परिस्थितियों में मिल के द्वारा व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करने के उद्देश्य से 1859 में प्रकाशित अपने प्रसिद्ध निबंध स्वतंत्रता की रचना की गयी है। इस पुस्तक में न केवल व्यवस्थापिका के हस्तक्षेप वरन् जनमत और परम्पराओं के दबाव से भी व्यक्ति के विचार अभिव्यक्ति और कार्य क्षेत्र की स्वतंत्रता की रक्षा का सशक्त समर्थन किया गया है। मिल ने अपनी इस पुस्तक में व्यक्ति स्वतंत्रता के दो पहलुओं पर बल दिया गया है — (1) विचार स्वातन्त्रता (2) कार्य स्वतंत्रता।

(1) विचार स्वतंत्रता → मिल विचार-स्वतंत्रता का कट्टर समर्थक था इस सम्बन्ध में उसका मत यह था कि हम सत्य को केवल तर्क-वितर्क द्वारा ही जान सकते हैं। और विचारों के संघर्ष में सदैव सत्य की विजय होती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को विचार और अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए और राज्य के द्वारा किसी भी प्रकार के विचार धारा या भाव अभिव्यक्ति पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहिए। किसी विचार का दमन करना सत्य का

दमन करना है क्योंकि यह जरूरी नहीं है कि सामान्य स्वीकृत विचार सत्य हों। मिल के अनुसार, किसी व्यक्ति का विचार सत्य हो सकता है या मिथ्या या आंशिक रूप से सत्य और आंशिक रूप से मिथ्या। यदि सत्य मत को रोका जाता है तो समाज और अधिकारी वर्ग विश्व को सच्चाई जानने से रोकते हैं यदि वह मत मिथ्या है तो भी उस पर रोक लगाना उचित नहीं है क्योंकि सत्य मिथ्या मत का अन्त कर देगा, जिससे मिथ्या मत रखनेवाला भी सच्चाई से परिचित हो सकेगा। और मिथ्या मत का अन्त करने के कारण सत्य अधिक प्रकाशमान हो जायेगा। अधिकारी वर्ग का यह दावा है कि वे समाज को हानि पहुँचाने वाले मतों को रोककर जनता की भलाई कर रहे हैं, उचित नहीं, क्योंकि जनता स्वयं ही मिथ्या मत को नहीं मानेगी। यदि कोई विचार आंशिक रूप से सत्य है तो भी प्रतिबन्ध लगाना उचित नहीं, क्योंकि उसमें कुछ तो सत्य है ही।

मिल न केवल सभी सामान्य व्यक्तियों को वरन् सनकी व्यक्तियों को भी विचार की स्वतंत्रता देने के पक्ष में है इस के पक्ष में सुकरात और ईसामसीह का उदाहरण देते हुए कहता है कि अपने जमाने में उन्हें सनकी समझा जाता था लेकिन आज वे सबके दृष्टि में पूज्य हैं। इस सम्बन्ध में वह आगे कहता है कि "दस सनकी व्यक्तियों में से दो निरर्थक बुद्धू हो सकते हैं, किन्तु दसवाँ व्यक्ति मानव जाति के लिए इतना लाभदायक हो सकता है कि जितने अनेक साधारण व्यक्ति मिलकर भी नहीं हो सकते।"

मिल का विचार था कि बहुमत सदैव ही ठीक नहीं हुआ करता अतः बहुमत के द्वारा अल्पमत का दमन नहीं किया

जाना चाहिए। मिल इस बात पर बल देता है कि शासन को ऐसी प्रकार के दमन का अधिकार प्राप्त नहीं होना चाहिए उसे जनता का समर्थन क्यों न प्राप्त हो विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थक बनकर मिल ने इंगलैंड की संसदात्मक पद्धति का समर्थन किया है।

(2) कार्य स्वतंत्रता → मिल के अनुसार कार्य स्वतंत्रता से व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रकट होता है और यह उसकी आत्मोन्नति का मार्ग है। उसके अनुसार - "मानव जीवन के सुख का एक मुख्य तत्व है और यही वैयक्तिक एवं सामाजिक प्रगति का भी आवश्यक तत्व है।" लेकिन विचार स्वतंत्रता और कार्य स्वतंत्रता में एक अन्तर है हमारे कार्यों का प्रभाव समाज के अन्य व्यक्तियों के जीवन पर पड़ता है इसलिए समाज या अन्य व्यक्ति अपनी सुरक्षा के हित में व्यक्ति की स्वतंत्रता पर आपत्ति कर सकते हैं। इसलिए एक व्यक्ति को विचार की स्वतंत्रता तो निरपेक्ष रूप में प्राप्त हो सकती है लेकिन कार्य की स्वतंत्रता उस सीमा तक ही प्राप्त हो सकती है जहाँ तक यह स्वतंत्रता अन्य व्यक्तियों को इसी प्रकार की स्वतंत्रता में बाधक नहीं बनती।

मिल मानव कार्यों को दो भागों में विभक्त करता है (i) स्वविषयक (ii) पर विषयक। पहले क्षेत्र के अन्तर्गत वे विषय आते हैं जिनका सम्बन्ध व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन से होता है इस क्षेत्र में सोना, पहनना, खाना और आचार विचार आदि कार्य आते हैं। मिल इन कार्यों के सम्बन्ध में व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना चाहता है उसका तो यहाँ तक कहना है कि व्यक्ति अपने घर में जुआ

खेलता है या मद्यपान करता है क्योंकि उसके इस कार्य का प्रभाव अन्य व्यक्तियों पर नहीं पड़ता है तो उसके राज्य या समाज के द्वारा हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए पर विषयक क्षेत्र में वे कार्य आते हैं जिनका प्रभाव लगभग के अन्य व्यक्तियों पर पड़ता है पर विषयक कार्यों में व्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित होती है विशेषकर जब उसके कार्यों से अन्य व्यक्तियों की स्वतंत्रता में बाधा पहुँचती हो इस सम्बन्ध में मिल लिखता है कि "वह एक मात्र उद्देश्य है जिसके लिए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से मानवजाति को अधिकार प्राप्त होता है कि वह अपने किसी सदस्य की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप न कर सके। आत्मरक्षा ही है। वह प्रयोजन, जिसके लिए सभ्य समाज के किसी सदस्य के विरुद्ध न्याय रूप से उसकी इच्छा के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है" यही है कि वह औरों को हानि न पहुँचा सके। उनके ही भौतिक या नैतिक हित के नाम पर उसके स्वतंत्रता में हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता अपने ऊपर अपने शरीर और मस्तिष्क पर व्यक्ति सम्प्रभु है मिल व्यक्ति की कार्य स्वतंत्रता का समर्थन करता है लेकिन उसका विचार है कि निम्नलिखित परिस्थितियों में व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए राज्य व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप कर सकता है।

1. यदि व्यक्ति स्वतंत्रता का अनुचित प्रयोग करते हुए अन्य व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधक हो
2. जब मनुष्य स्वतंत्रता के अनुचित प्रयोग द्वारा अपने कर्तव्य का पालन करना भूल जाय।
3. संकटकालीन स्थितियों का सामना करने के लिए भी व्यक्ति को अपने स्वतंत्रता का कुछ अंश त्यागने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

स्वतंत्रता सिद्धांत की आलोचना → (1) मिल द्वारा विचार अभिव्यक्ति और कर्म की जिस स्वतंत्रता का प्रतिपादन किया गया है उसपर प्रमुख रूप से निम्नलिखित आधारों पर आक्षेप किया जा सकता है—

(1) मनुष्य सदैव अपने हितों का सर्वोत्तम निर्णायक नहीं— मिल की स्वतंत्रता सम्बन्धी धारणा का आधारभूत विचार है कि अपने ऊपर, अपने शरीर और मस्तिष्क के ऊपर व्यक्ति सम्प्रभु है। इसका औचित्य इस मान्यता पर आधारित है कि व्यक्ति अपने हित का सर्वोत्तम निर्णायक होता है लेकिन व्यवहार में इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।

(2) सनकी व्यक्तियों को स्वाधीनता देना सामाजिक हित में नहीं— आलोचकों का कहना है सनकियों और झक्कियों को सुकरात और ईसामसीह जैसे अलौकिक और दिव्य पुरुषों की श्रेणी में रखना महान पुरुषों की स्थिति को न समझ पाना है।

(3) विचार स्वातंत्र्य सम्बन्धी धारणा दुराग्रहपूर्ण और असन्तुलित → मिल की विचार स्वतंत्रता सम्बन्धी धारणा निश्चित रूप से दुराग्रहपूर्ण है इसके दुराग्रह का सबसे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि मिल सनकी व्यक्तियों को तो स्वतंत्रता प्रदान करने के पक्ष में है किन्तु पिछड़े हुए वर्गों और जातियों के व्यक्तियों को स्वतंत्रता से वंचित रखना चाहता है। ऐसी स्थिति में मिल की स्वतंत्रता समाज के उच्च वर्गों का विशेषाधिकार बनकर रह जाती है।

(4) अनुचित बहस की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना →